(छहढाला प्रवचन, पृष्ठ : 23 का शेष...)

वीतरागी देव-गुरु-धर्म की निंदा करनेवाला तथा तीव्र हिंसादि पाप करनेवाला जीव अपने पाप का फल भोगने के लिए नरक में जाकर औंधे सिर गिरते हैं। अरे, वहाँ के दुःख का क्या कहना? वहाँ की भूमि दुःखदायक, वहाँ की नदी दुःखदायक, वहाँ की हवा दुःखदायक, वहाँ के ऋतु की तीव्र शीत-उष्णता दुःखदायक, वहाँ के जीव भी परस्पर एक-दूसरे को दुःख देनेवाले, वहाँ न खाने का अन्न मिले, न पीने का पानी ह्न इसप्रकार बाहर में सर्वत्र प्रतिकूलता का घेरा है और अन्दर में वह जीव अपने तीव्र संक्लेश भावों के कारण दुःखी है।

नरक में गरमी भी असह्य और ठंड भी ऐसी कि जिसमें लोहपिंड पिघल जाये ह्न जैसे कि सख्त बर्फ (हिमराशि) की वर्षा से वनस्पतियाँ दग्ध हो जाती हैं। इस बात का दृष्टान्त लेकर 'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' में श्री कुमुदचन्द्रस्वामी कहते हैं ह्न

हे प्रभो ! क्रोध को तो आपने पहले ही नष्ट कर डाला था, तब फिर क्रोधाग्नि के बिना आपने कर्म को कैसे दग्ध किया? सामान्य लोग किसी का नाश करने के लिए उसके ऊपर क्रोध करते हैं, किसी को भस्म करने के लिए अग्नि की जरूरत रहती है, परन्तु हे प्रभो ! आश्चर्य है कि आपने तो क्रोध किये बिना ही कर्मों का नाश कर दिया; क्रोधाग्नि के बिना ही आपने कर्मों को जला दिया। सचमुच में भगवान ने शान्त-वीतरागपरिणामों के द्वारा कर्मों को भस्म कर दिया। जैसे हिमराशि ठंडा होने पर भी हरे वृक्षों के वन को जला देता है, वैसे क्रोधरहित वीतरागी शांतपरिणाम वाले होते हुए भी भगवान ने कर्मों को नष्ट कर दिया।

देखो, इस तरह से भगवान की स्तुति की है और साथ में यह भी दिखाया है कि वीतरागभाव से ही कर्मों का नाश होता है। कोई कुदेवता अपने शत्रु के ऊपर क्रोध करके तीसरे लोचन के द्वारा उसको भस्म करता है ह्न ऐसा कई लोग मानते हैं, परन्तु ऐसी बात वीतराग मार्ग में संभव नहीं है ह्न यह भी इसमें आ गया। वीतरागमार्गी सन्तों के द्वारा की गई स्तुति गंभीर भावों से भरी हुई होती है। यहाँ पर यह कहना है कि जैसे भगवान ने शान्त परिणाम के द्वारा भी कर्मों को नष्ट कर दिया, वैसे नरक में शीत भी इतनी उत्कृष्ट है कि जिसकी ठंड से मेरु जितना लोहे का गोला भी पिघल जाता है। 'त्रिलोकप्रज्ञप्ति' के दूसरे अध्याय में यह बात दिखायी है। ऐसी तीव्र शीत-उष्णता का दुःख, छेदन-भेदन का दुःख अनन्तबार जीव ने भोगा; इसके उपरान्त अन्य कैसे-कैसे दुःख नरक में भोगे यह आगे की गाथा में कहते हैं।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 292 अंक : 4

हम बैठे अपनी मौन सौं !

दस दिन के मेहमान जगतजन,
बोलि विगारै कौन सौं।।हम..।।
गये विलाय भरम के बादर,
परमारथ-पथ-पौन सौं।
अब अन्तर गति भई हमारी,
परचे राधा रौन सौं।।हम..।।
प्रगटी सुधापान की महिमा,
मन नहिं लागै बौन सौं।
छिन न सुहाय और रस फीके,
रुचि साहिब के लौन सौं।।हम..।।
रहे अघाय पाय सुख संपति,
को निकसै निज भौन सौं।
सहज भाव सद्गुरु की संगति,
सुरझै आवागौन सौं।।हम..।।

योगी तो निर्जरा ही करता है

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 44 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

अगच्छंस्तद्विशेषाणामनभिज्ञश्च जायते।
अज्ञाततद्विशेषस्तु बद्ध्येते न विमुच्यते ।।44।।

शरीरादि बाह्य पदार्थों से अनभिज्ञ रहता हुआ योगी अपने आत्मस्वरूप में ही स्थिर होता है। इस कारण वह बंध के कारणरूप राग-द्वेष के अभाव में कर्मों से न बंधता हुआ निर्जरा ही करता है।

(गतांक से आगे ...)

परमपारिणामिक ध्रुव स्वत:सिद्ध स्वात्मतत्त्व में स्थिर हुए योगी निज आत्मा से भिन्न शरीरादि अन्य वस्तुओं में प्रवृत्ति नहीं करते - 'इसलिए उन्हें यह शरीर सुन्दर है या असुन्दर, मनोज्ञ है या अमनोज्ञ' ह्न ऐसी शरीर की अवस्थाओं का ख्याल नहीं रहता।

लोगों ने ऐसी बात कभी सुनी ही नहीं, इसलिए उपयोग में कठिन पड़ती है। व्रत-तप करें, बासा आचार न खाएँ ह्न इसमें ही धर्म माननेवालों को सच्चे वीतराग मार्ग की बात कहाँ से बैठे? उन्हें मिथ्यात्व सहित शुभ बंध तो होता है; पर धर्म नहीं होता, आत्मलाभ नहीं होता।

प्रभु ! तेरी चीज तो सदा सहज-सरल है; किन्तु तूने उसे अपनी श्रद्धा में बहुत कठिन मान लिया और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न ही नहीं किया। उसे कठिन मानकर सोचता है कि मैं अपनी वस्तु को कैसे प्राप्त करूँ ? तूने दृष्टि में स्वभाव की समीपता करने के बजाय शरीर, राग, पुण्यादिक की समीपता की है; इसलिये तुझे यह सरल बात भी कठिन लगती है।

भगवान आत्मा में दो अंश हैं ह्न एक सामान्य त्रिकाली ध्रुव अंश और दूसरा पर्याय विशेष अंश। उसमें वर्तमान पर्याय अंश में राग है, यदि उसे ही मुख्य करें तो त्रिकाली सामान्य अंश दृष्टि में से ओझल हो जाता है और यदि सामान्य त्रिकाली

परमानन्द स्वभाव अंश को मुख्य करके उसकी दृष्टि, ज्ञान और स्थिरता करें तो पर्याय अंश और परद्रव्य- सब दृष्टि में से ओझल हो जाते हैं। तब शरीर की विशेष अवस्था का तो ख्याल रहता ही नहीं है; अपनी भी विशेष अवस्था का ख्याल नहीं रहता; क्योंकि पर्याय स्वयं ही स्वभाव की ओर ढल गयी है।

मिथ्यादृष्टि को अपनी पर्याय और शरीरादि परद्रव्य की पर्याय में एकता के कारण राग-द्वेष और इष्ट-अनिष्ट बुद्धि होती है तथा ज्ञानी को जब स्वभाव में लीनता होती है, तब स्वयं की या पर की विशेष अवस्था का लक्ष्य नहीं होने से राग-द्वेष उत्पन्न ही नहीं होते और स्वभाव का आश्रय लिया हुआ होने से पर्याय में शांति, वीतरागता आदि निर्मलता प्रकट होती है। फिर उसी की वृद्धि होती है, जिसे संवर-निर्जरा कहते हैं। आचार्यों ने थोड़े से में पूरा सार कह दिया है।

श्रोता : परन्तु बहुत सूक्ष्म बात है प्रभु !

सूक्ष्म है पर यथार्थ है न। यही एक मार्ग है, दूसरा कोई मार्ग नहीं है। जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म को जाननेवाला हो, उसके लिये सूक्ष्म क्या रहा ? उसका तो मुक्तिमार्ग खुल गया है। सूक्ष्म है, पर अनुभव में बराबर आये - ऐसा है। जिसकी दृष्टि परपदार्थ और शुभाशुभ विकारी भावों पर है, उसे तो भगवान आत्मा दृष्टि में ओझल है; पर जिसने आत्मस्वभाव को ही दृष्टि में लिया हो, उसे बाद में क्या बाकी रह गया ? जिसने ज्ञान में सामान्य-द्रव्यस्वभाव को ज्ञेय बनाया हो, उसे संपूर्ण स्वभाव जानने में आ जाता है।

यहाँ तो यह कहना है कि स्वभाव में स्थिर हुए योगी को सातवें गुणस्थान में जो निर्जरा होती है, उतनी निर्जरा व्रत, तप के विकल्प में लगे हुए छठवें गुणस्थानवर्ती मुनि को नहीं होती। स्वभाव में स्थित योगी को स्व और पर की विशेष अवस्था का लक्ष्य नहीं होने से अच्छे-बुरे की बुद्धि नहीं होती, और उससे राग-द्वेष भी नहीं होते। अत: कर्म भी नहीं बंधते और निर्जरा भी विशेष होती है। उसे तो व्रत के विकल्प की भूमिका में जो निर्जरा हुई थी, उससे भी विशेष निर्जरा होती है।

पाँचवे-छठे गुणस्थान में सामान्य स्वभाव का आश्रय कम है, उससे शुद्धि भी

(शेष पृष्ठ : 30 पर ..)

परमाणु और स्कंध

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 20 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

अणुखंधवियप्पेण दु पोग्गलदव्वं हवेइ दुवियप्पं।
खंधा हु छप्पयारा परमाणू चेव दुवियप्पो ॥20॥

परमाणु और स्कंध ह्न ऐसे दो भेद से पुद्गल द्रव्य दो प्रकार का है। स्कंध वास्तव में छह प्रकार का है और परमाणु के दो भेद हैं।

(गतांक से आगे)

1) **अतिस्थूलस्थूल ह्न** सुमेरू, पृथ्वी आदि (घन पदार्थ) वास्तव में अतिस्थूल-स्थूल पुद्गल हैं।

2) **स्थूल ह्न** घी, तेल, दूध, जल आदि समस्त (प्रवाही) पदार्थ स्थूल पुद्गल हैं।

3) **स्थूलसूक्ष्म ह्न** छाया, आतप, अंधकारादि स्थूलसूक्ष्म पुद्गल हैं; क्योंकि चक्षु के माध्यम से वे देखने में तो आते हैं, किन्तु हस्तादिक से ग्रहण नहीं किये जा सकते। चक्षु के विषय होने से स्थूल और हस्तादिक से ग्रहण न होने के कारण सूक्ष्म कहलाते हैं।

4) **सूक्ष्मस्थूल ह्न** स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय तथा श्रोत्रेन्द्रिय के विषय ह्न स्पर्श, रस, गंध और शब्द सूक्ष्मस्थूल पुद्गल हैं। चक्षु के माध्यम से नहीं दिखते; अत: सूक्ष्म और अन्य चार इन्द्रियों से ग्रहण होते हैं, इसलिये स्थूल हैं।

5) **सूक्ष्म ह्न** शुभाशुभ परिणामों द्वारा आनेवाले कर्मों के योग्य (स्कन्ध) ह्न सूक्ष्म पुद्गल हैं। आत्मा जैसा भाव करता है, तदनुसार कर्म आकर मिल जाते हैं, उन कर्मों को सूक्ष्म पुद्गल कहते हैं।

6) **सूक्ष्मसूक्ष्म ह्न** इनसे विपरीत अर्थात् कर्म वर्गणा के अयोग्य (स्कन्ध) ह्न सूक्ष्मसूक्ष्म पुद्गल हैं ह्न ऐसा विभावपुद्गल का क्रम है।

स्कन्ध छह प्रकार के हैं। (1) काष्ठपाषाणादि जो स्कन्ध छेदन किये जाने पर स्वयमेव जुड़ नहीं सकते, वे स्कन्ध अतिस्थूलस्थूल हैं। (2) दूध, जल आदि जो स्कन्ध छेदन किये जाने पर पुन: स्वयमेव जुड़ जाते हैं, वे स्कन्ध स्थूल हैं। (3) धूप, छाया, चांदनी, अंधकार इत्यादि जो स्कन्ध स्थूल ज्ञात होने पर भी भेदे नहीं जा सकते या हस्तादिक से ग्रहण नहीं किये जा सकते, वे स्कन्ध स्थूलसूक्ष्म हैं। (4) आँख से न दिखनेवाले; किन्तु अन्य चार इन्द्रियों के विषयभूत स्कन्ध सूक्ष्म होने पर भी स्थूल ज्ञात होते हैं। स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्श किये जा सकते हैं, जीभ से आस्वादन किये जा सकते हैं, नाक से सूंघे जा सकते हैं अथवा कान से सुने जा सकते हैं, वे स्कन्ध सूक्ष्मस्थूल हैं। (5) इन्द्रियज्ञान को अगोचर कर्मवर्गणारूप जो स्कन्ध हैं, वे स्कन्ध सूक्ष्म हैं। (6) कर्मवर्गणा से नीचे के (कर्मवर्गणातीत) जो अत्यंत सूक्ष्म द्वि-अणुकपर्यंत स्कन्ध हैं, वे स्कन्ध सूक्ष्मसूक्ष्म हैं।

श्रीमद् कुन्दकुन्दाचार्यदेव पंचास्तिकाय में कहते हैं कि पृथ्वी, जल, छाया, चार इन्द्रियों के विषयभूत, कर्म के अयोग्य और कर्मातीत ह्न ऐसे पुद्गल स्कन्ध छह प्रकार के हैं।

आचार्य अमृतचंद्रसूरि ने श्री समयसार की आत्मख्याति नामक टीका के 44 वें श्लोक में कहा है कि ह्न

इस अनादिकाल के विशाल अविवेक के नाटक में अथवा नाच में वर्णादिमान पुद्गल ही नाचता है, अन्य कोई नहीं। जीव तो अनेकप्रकार का है नहीं; वह तो रागादिक पुद्गल विकारों से विलक्षण शुद्ध चैतन्यधातुमय मूर्ति है।

अहो ! भगवान आत्मा चैतन्यमयवस्तु है, वह इसकी धातु है। विकार को धारण करके रखना चैतन्य का स्वभाव नहीं है; अत: विकार को पुद्गलजन्य कहा जाता है। जिसे जानने-देखनेवाले आत्मा का भान नहीं है, उसके लिये यह आरोप किया जाता है कि वह कर्म से भटकता है। आत्मा पर से भिन्न है - जिसे इसका विवेक नहीं, उसे पुद्गल ही नचाता है ह्न ऐसा कहते हैं। पुद्गल की पर्याय आत्मा

को लेकर नहीं होती, फिर भी शरीर की अवस्था मुझसे संबंधित होकर हुई - ऐसा जो माने वह अविवेकी है। वह अविवेक निमित्त के आश्रय से हुआ होने से निमित्त का है - ऐसा आरोप दिया जाता है। आत्मा तो जानने देखनेवाला है ह्न ऐसा कहकर स्वभावदृष्टि कराते हैं।

यह अजीव का अधिकार है, इसमें कहते हैं कि आत्मा चैतन्यमय धातु है। उसमें राग अथवा जड़ के कार्य में सावधानी रखने रूप बात भी नहीं है; क्योंकि ये सब तो अजीव जड़ का कार्य है। यहाँ क्षणिक का माहात्म्य नहीं कराते हुए कायमवस्तु चैतन्यमूर्ति आत्मा का माहात्म्य कराते हैं। अत: हे जीव ! जड़ मैं नहीं; विकार मैं नहीं ह्न ऐसी प्रतीति कर और पर को अपना मानने रूप गाढ़ा अज्ञान छोड़।

स्वभावदृष्टि करने पर आत्मा में अनेकप्रकार दिखते ही नहीं हैं। पुद्गल में ही ये सबप्रकार दिखते हैं; क्योंकि निमित्त के लक्ष्य से हुई पर्याय ही अनेकता को प्राप्त होती है, वह आत्मा का स्वभाव नहीं है। अत: सारा संसार पुद्गल ही है। इसका अर्थ ऐसा नहीं है कि पर्याय में दोष है ही नहीं, सब दोष पर का ही है। वस्तुत: तो अपने अपराध से ही पर्याय में दोष होता है, किन्तु वह क्षणिक है और स्वभाव में दोष नहीं है ह्न ऐसा जानकर छोडने के लिए दोष को पर का कहा है।

यह आत्मा तो रागादि से भिन्न, शुद्ध, चैतन्यमूर्ति है। तीर्थंकर नामकर्म भी पुद्गल का विकार है, वह आत्मा नहीं है। जो पर्याय पर में अटक कर होती है, वह विकार है। आत्मा का लक्षण इससे विरुद्ध है। राग आत्मा का लक्षण नहीं है। यहाँ अजीव का अधिकार होने पर भी चैतन्य की बात करते हैं कि जड़ को जाननेवाला तो चैतन्यस्वरूपी आत्मा ही है। जिसप्रकार सोना, सोने को धारण किये रहता है; तांबे को नहीं; उसीप्रकार आत्मा चैतन्य धातु है, वह चैतन्य को धारण किये रहता है, राग को नहीं। तथा वह राग का नाश भी नहीं करता; क्योंकि राग का नाश करना भी आत्मा का स्वभाव नहीं। स्वभाव की रुचि, ज्ञान और एकाग्रता होने पर राग का नाश स्वयमेव ही हो जाता है, करना नहीं पड़ता। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

नारकियों के दुःखों का विशेष कथन

सेमर-तरु दलजुत असिपत्र, असि ज्यों देह बिदारें तत्र।
मेरु समान लोह गल जाय, ऐसी शीत-उष्णता थाय।।१०।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

नरकभूमि में सेमर के वृक्ष ऐसे होते हैं कि जिनके पत्ते तलवार की तीक्ष्ण धार जैसे होते हैं। उस वृक्ष के नीचे थोड़ा-सा विश्राम लेने की आशा से जब नारकी जीव जाते हैं, तो तुरन्त ही ऊपर से सेमरवृक्ष के नोकदार पत्ते गिरकर उनके शरीर को बेध डालते हैं। वे जहाँ-कहीं भी सुख की आशा से जाते हैं वहाँ सर्वत्र महान दुःख ही पाते हैं।

वहाँ की पृथ्वी एवं वृक्ष भी उन जीवों को भाले की तरह बेध डालते हैं और वहाँ ठंडी-गरमी इतनी तीव्र है कि मेरुपर्वत जितना लाख योजन का लोहे का गोला ऊपर से नीचे गिरते-गिरते बीच में ही पिघल जाये। अग्नि में जैसे घी पिघल जाये, वैसे वहाँ की तीव्र उष्णता में लोहे का लाख मन का गोला भी पिघल जाता है; मात्र उष्णता से नहीं ह्न अपितु वहाँ की ठण्ड से भी लोहे का गोला गलित हो जाता है; जैसे हीम (बर्फ) के पड़ने से वनस्पतियाँ दग्ध हो जाती हैं, वैसे नरक की ठण्ड से लोहगोला भी गलकर छिन्न-भिन्न हो जाता है। नरक में ऐसी ठण्डी-गरमी कम से कम दस हजार से लेकर असंख्य वर्षों तक उन जीवों को सहन करनी पड़ती है।

प्रारम्भ के चार नरक तक की भूमि गरम है, पाँचवीं नरक के अमुक भागों में ठण्डी है, छट्ठी एवं सातवीं नरक की भूमि ठण्डी है। पहली नरक भूमि में आयुस्थिति कम से कम दस हजार वर्ष है; इसके ऊपर एक समय, दो समय ह्न ऐसे बढ़ते-बढ़ते अन्त में सातवीं नरक भूमि में उत्कृष्ट आयुस्थिति तैंतीस सागरोपम की है। इसप्रकार दस हजार वर्ष से लेकर ३३ सागरोपम तक के जो असंख्य भंग, उनमें से प्रत्येक में अनन्तबार जीव उत्पन्न हो चुका है। अरे, अनन्तकाल के दीर्घ भवभ्रमण में जीव ने कुछ बाकी नहीं रखा। भाई, तेरे दुःख की दीर्घता भी तुझे मालूम नहीं। यदि अपने दुःख की दीर्घता का ख्याल आये तो जीव उससे छूटने का उपाय करे। अनादि-अनन्त टिकनेवाला जीव, उसका अनादि से अबतक का दीर्घकाल संसार के दुःख में ही बीता। अतः अब आत्मज्ञान करके सिद्धपद को साध ! वह सादि-अनन्त सिद्धपद का काल संसार से अनन्तगुना है। ऐसे सिद्धपद के महान सुख की प्राप्ति और संसार दुःख का अन्त वीतराग-विज्ञान के द्वारा ही होता है, अतः वीतराग-विज्ञान मंगल है।

नरक में स्पर्श-रस-गन्ध ह्न ये सभी प्रतिकूल हैं; वहाँ क्षणमात्र भी साता नहीं है। हजारों-लाखों वर्ष तक जिसने नरक की शीत-उष्णता का दुःख सहन किया, भाले जैसी भूमि में जो दीर्घकाल तक रहा; वही का वही यह जीव है, किन्तु उन सबको वह भूल गया। अभी तो एक छोटा-सा काँटा चुभने पर भी वह सहन नहीं करता। देह की सुविधा के पीछे आत्मा को बिलकुल भूल रहा है। अब भी आत्मा का ज्ञान जो नहीं करेगा, उसको चारों गति के जैसे के वैसे दुःख फिर भोगना पड़ेंगे। अतः हे बन्धु ! इस मनुष्य अवतार में आत्मा की दरकार करना। अनेक जीवों को नरक के दुःखों का वर्णन सुनकर वैराग्य हुआ और वे दीक्षा लेकर मुनि हो गये; उन्होंने आत्मा के आनंद में लीन होकर के दुःख का अभाव किया।

यहाँ थोड़ी-सी प्रतिकूलता आने पर भी कैसा व्याकुल हो जाता है? किन्तु नरक की प्रतिकूलता के आगे यहाँ की प्रतिकूलता तो कुछ भी नहीं है। अरे, नरक की उस अनंत दुःखवेदना के बीच में असंख्य वर्ष जीव ने कैसे बिताये होंगे? असंख्य वर्षों तक उस अनंती वेदना को भोगता हुआ भी जीव जिन्दा ही रहा, जीव मर नहीं गया। इतना ही नहीं, अपितु उस वेदना के बीच में भी अंतरस्वभाव के सन्मुख होकर असंख्य जीवों ने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। अरे भाई ! जरा सोचो तो सही, संसारदुःख से तुम्हारा उद्धार करने के लिए वीतरागी सन्त तुमको यह उपदेश दे रहे हैं।

क्या तुम दुःख को चाहते हो? ह्न नहीं; तो उसके कारणरूप मिथ्यात्वादि भावों को छोड़ देना चाहिए। वह मिथ्यात्वादि भाव कैसे छूटें ह्न उसका उपाय तीसरी ढाल में कहेंगे। यहाँ छेदन-भेदन, भूख-प्यास आदि प्रतिकूल संयोगों के द्वारा नरक के दुःख का कथन करके तीव्र पाप का फल दिखाया है; ऐसा पाप मिथ्यादृष्टि जीव ही बाँधते हैं। नरक के योग्य पाप सम्यग्दृष्टि जीव कभी नहीं बाँधते। हे जीव ! जब तू ऐसे सम्यक्त्वादि भाव प्रगट करेगा, तभी तुझे दुःखों से छुटकारा मिलेगा। तेरे अज्ञान से तुझे जो कष्ट हुआ, भगवान तुझे उसकी याद दिलाते हैं, अतः अब उससे छूटने का उपाय कर; तेरे हित के लिए वीतराग-विज्ञान का यह उपदेश ध्यान देकर सुन।

नरक के जीवों को तीव्र असाता रहती है; परन्तु जब मनुष्यलोक में तीर्थंकर भगवान का जन्म कल्याणक होता है, तब उन नारकी जीवों को भी दो घड़ी के लिए साता हो जाती है; उस वक्त विचार करने पर किसी को ऐसा ख्याल आ जाता है कि अहो ! मध्यलोक में कहीं देवाधिदेव तीर्थंकर का अवतार हुआ है, उन्हीं के प्रभाव से हमें यहाँ नरक में भी साता हो रही है। इसप्रकार के विचार से तीर्थंकर की महिमा लक्ष्य में लेकर कोई-कोई जीव अन्तर में अपने स्वभाव में झुक जाते हैं और सम्यग्दर्शन प्रगट कर लेते हैं। प्रत्येक नरक में असंख्यात सम्यग्दृष्टि जीव हैं और उनसे असंख्यातगुने मिथ्यादृष्टि भी हैं।

(शेष पृष्ठ : 4 पर....)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : छह द्रव्यस्वरूप लोक ज्ञेय है। पंच परमेष्ठी भगवान भी ज्ञेय में आ जाते हैं, इसमें जानने योग्य हैं ह्न ऐसा कहा जाता है, तब हमें भगवान की भक्ति करना चाहिए या नहीं ?

उत्तर : भक्ति करने न करने की बात नहीं, लेकिन भक्ति का भाव ज्ञेय होने से जानने लायक है ह्न ऐसा कहा है। समयसार गाथा ११ में ऐसा कहा है कि भूतार्थ प्रभु का आश्रय लेने से सम्यग्दर्शन होता है। त्रिकाली का आश्रय लेकर जो निर्मल पर्याय प्रकट हुई उसको भी त्रिकाली से भिन्न कहा है और गाथा १२ में कहा है कि साधक हुआ उसको शुद्धता के थोड़े अंश हुए हैं। अशुद्धता के अंश हैं, उसका क्या ? तो कहते हैं कि यह शुद्ध-अशुद्ध पर्याय अंश है, वह जानने योग्य है।

प्रश्न : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उसे देव देता है। जिसके पास होता है, वह देता है, तो यह किसप्रकार है ?

उत्तर : यह तो निमित्त से व्यवहार का कथन है। देव की ओर झुकाववाले को शुद्धता प्रकट होती है और बन्ध साथ में पुण्यबन्ध होता है। उसके फल में काम और अर्थ मिलता है।

प्रश्न : यह तो ठीक ! भगवान के पास से क्या यह सब मिलता है ?

उत्तर : जिसको काम और अर्थ की स्पृहा है, भावना है, उसको मिलता नहीं; लेकिन जिसको आत्मा के हित की भावना है, उसके साथ पुण्य बँधता है और उसका फल मिलता है, यह बात समझाई है।

प्रश्न : व्रत-तप-त्याग के शुभभाव से आत्मा का मैल निकल जाता है क्या ?

उत्तर : नहीं, यह तो राग है; इसको अपना मानना मिथ्यात्व है, दोष है, भ्रम है।

प्रश्न : साधारण जीवों के लिए तो व्रतादि करना ही धर्म है न ?

उत्तर : साधारण जीवों के लिए भी यह व्रतादि के शुभभाव धर्म नहीं है, यह सब समझने का अभ्यास प्रथम करके आत्मज्ञान होता है; तत्पश्चात् व्रतादि का विकल्प

आता है। आत्मा को समझे बिना यदि व्रतादि-क्रिया लाभ-बुद्धि से की जाय तो मिथ्यात्व की पुष्टि होती है।

प्रश्न : क्या किसी अपेक्षा ज्ञान भी बंध का कारण हो सकता है ?

उत्तर : शास्त्रज्ञान पुण्यबन्ध का कारण है, संसार का ज्ञान पापबन्ध का कारण है और आत्मज्ञान धर्म का कारण है। शास्त्र का ज्ञान पुण्यबन्ध कारण है, किन्तु कौन-सा शास्त्र है ? सर्वज्ञकथित शास्त्र का ज्ञान पुण्य का कारण है, अन्य के कहे हुए शास्त्रों की तो बात भी नहीं है। शास्त्रज्ञान है, उसमें शास्त्र निमित्त है, वह परलक्षीज्ञान है, इसलिए निषिद्ध है, आत्मा का ज्ञान निश्चय है। उसी भाँति नवतत्त्वों की श्रद्धा में नवतत्त्व निमित्त है, आत्मा निमित्त नहीं है। इसलिए वह भेदवाली श्रद्धा राग है, व्यवहार है और वह व्यवहार श्रद्धा अभव्य को भी होती है, उसे आत्मा की श्रद्धा नहीं है। षट्काय के जीवों की दया का विकल्प शुभराग है। ये सब होने पर भी निश्चयचारित्र नहीं हो, ऐसा भी हो सकता है, क्योंकि निश्चयचारित्र तो स्व के आश्रय से होता है और उसके साथ व्यवहारचारित्र का विकल्प हो भी और न भी हो।

प्रश्न : एकमात्र अध्यवसान ही बन्ध का कारण है, बाह्य वस्तु बन्ध का कारण नहीं; तब क्या बाह्यवस्तु के बिना बन्ध होता है ?

उत्तर : शुभ-अशुभरूप अध्यवसान एक ही बन्ध का कारण है, तदतिरिक्त कोई बाह्यवस्तु बन्ध का कारण होती हो ह्न ऐसा ही नहीं। पुण्य-पापरूपभावों में जो एकत्वबुद्धिरूप अध्यवसान है वही बन्ध का कारण है। बाह्यवस्तु अध्यवसान होने का कारण-निमित्त तो होती है, क्योंकि बाह्यवस्तु का आश्रय करके ही अध्यवसाय होता है, फिर भी बाह्यवस्तु बन्ध का कारण तो कदापि होती नहीं है। सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती के ९६ करोड़ पैदल सेना और ९६ हजार रानियाँ आदि बाह्य वैभव है, परन्तु वह सब कुछ बन्ध का कारण नहीं है; बन्ध का कारण तो एक मात्र अध्यवसाय ही है, बाह्यवस्तु रंचमात्र भी बन्ध का कारण नहीं है। यदि बाह्य वस्तु बन्ध का कारण होती तो सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती तीर्थंकरादि के प्रभूत अनुकूल सामग्री नहीं है, किन्तु उनको अध्यवसाय के अभाव होने से वह बाह्यसामग्री भी बन्ध का कारण नहीं होती। एक अध्यवसान ही बन्ध का कारण है, संसार की जड़ है; इसलिए उसी से नरक-निगोदादि चौरासी के अवतार होते हैं।

देश-विदेश में दशलक्षण पर्व धूम-धाम से सम्पन्न

जैन परम्परानुसार मनाये जानेवाले सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व को सम्पूर्ण देश एवं विदेश में दिनांक 16 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2007 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से 532 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर जैनमंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

*** जयपुर (श्री टोडरमल स्मारक भवन) :** यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: महिला-मंडल बापूनगर के सहयोग से महाविद्यालय के छात्रों द्वारा दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। विधानोपरांत गुरुदेव श्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मोक्षमार्ग प्रकाशक के चौथे अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुए साथ ही दोपहर में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री की मोक्षशास्त्र पर कक्षा तथा रात्रि में पण्डित नीतेशकुमारजी शास्त्री के दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला। इसके अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** मुम्बई :** यहाँ सीमंधर जिनालय द्वारा इस वर्ष व्याख्यानों का आयोजन भारतीय विद्या भवन में रखा गया, जहाँ प्रतिदिन प्रात: **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल,** जयपुर के दशलक्षण धर्मों पर हुए मार्मिक प्रवचनों को सहस्त्राधिक श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना।

आपके प्रवचनों के पूर्व पण्डित विपिनजी शास्त्री, श्योपुर के प्रवचन हुए। आपके प्रवचन सायंकाल सीमंधर जिनालय में ही होते थे।

इस अवसर पर डॉ.भारिल्ल के 38,517 **घंटों** के सी.डी. व वी.सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँचे। इसी प्रसंग पर एक हजार धर्म के दशलक्षण और एक हजार क्रमबद्धपर्याय की पुस्तकों का प्रभावना के रूप में वितरण हुआ तथा सम्पूर्ण मुम्बई में स्वाध्याय का संकल्प लेने वाले 500 साधर्मियों को समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका) स्वाध्यायार्थ भेंट स्वरूप दी गईं।

*** कोटा (राज.) :** यहाँ रामपुरा स्थित दि. जैन मंदिर में डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई, जयपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग-प्रकाशक तथा रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुए। इसके साथ ही यहाँ क्षमावाणी दिवस के अवसर पर विद्वत् शिरोमणि बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के दो हृदयग्राही प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला तथा इन प्रवचनों की सी. डी. भी तैयार की गई है, जिसे आप कोटा से प्राप्त कर सकते हैं।

*** मोड़लिम्ब (सोलापुर-महा.) :** यहाँ ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा दोनों समय जिनधर्म प्रवेशिका की कक्षा ली गयी। इसके साथ ही तीन दिन दोपहर में शंका-समाधान हेतु विशेष कक्षा ली गयी। आपके साथ पण्डित दीपकजी मंझलेकर ने दो दिन विशेष कार्यक्रम कराये।

पर्व के अवसर पर यहाँ समयसार का सार (मराठी) का विमोचन किया गया, जिसकी 360 प्रतियाँ मोडलिम्ब के अतिरिक्त करकम्ब, परलीवइजनाथ में भी वितरित की गई। वीतराग-विज्ञान (मराठी) के अनेक नये सदस्य बने। छोटा गाँव होते हुये भी समाज ने बड़ा मंदिर एवं सांस्कृतिक भवन के निर्माण का निर्णय लिया। ज्ञातव्य है कि ब्र.जी का एक प्रवचन कुर्डूवाडी में एवं दो प्रवचन भिगवन में भी हुये।

*** उदयपुर (हिरणमगरी सैक्टर-11) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल के विशेष आग्रह पर जयपुर से पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा पधारे। प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के उपरान्त आपके नियमसार एवं समयसार ग्रन्थ पर तथा रात्रि में दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में श्री अशोकभाई द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। पर्व के उपरान्त आपका एक प्रवचन चित्तौडगढ में भी हुआ।

*** अशोकनगर (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीरस्वामी दि. जैन स्वाध्याय मंदिर में प्रात: पूजन एवं दसलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के ग्रंथाधिराज समयसार के आधार से ज्ञेय-ज्ञायक एवं भाव्य भावक भाव, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त प्रवचनसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसी प्रसंग पर विदुषी कु. परिणति पाटील द्वारा दोपहर में द्रव्य संग्रह पर कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** कोलकाता :** यहाँ भवानीपुर स्थित नवनिर्मित जिनालय, पद्मोपुकुर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा रात्रि में आपके द्वारा करणानुयोग पर विशेष कक्षा एवं तदुपरान्त दसलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इस प्रसंग पर पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संगीतमय पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सुंदर आयोजन हुआ। तीन दिन पण्डित पंकजजी शास्त्री की रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर कक्षा तथा द्रोणगिरि पंचकल्याणक का आमंत्रण देने पधारे पण्डित विरागजी शास्त्री के एक प्रवचन का लाभ मिला। मुमुक्षु मण्डल की ओर से पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 31 हजार रुपये की सहयोग राशि प्रदान की गई। **ह्न हर्षद भाई**

*** पीसांगन (राज.) :** यहाँ पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन किये गये। इसके साथ ही यहाँ आपके निर्देशन में पण्डित सुरेशजी काले एवं पण्डित दीपकजी, भिण्ड द्वारा कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन किया गया तथा जिनेन्द्रभक्ति के

साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये एवं पण्डितजी ने बंद पड़ी हुई पाठशाला को पुन: चलाने हेतु समाज को प्रोत्साहित किया।

*** जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के प्रात:कालीन सभा में प्रवचनसार गाथा 200 पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर चर्चा हुई साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न कराये गये। इसी दौरान सत्साहित्य व प्रवचनों के कैसेट पर 25 प्रतिशत की छूट भी रखी गई थी।

*** भागलपुर (बिहार) :** यहाँ पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के प्रात: चम्पापुर सिद्धक्षेत्र पर विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए। आपके ही द्वारा दोपहर में भागलपुर में तत्त्वार्थसूत्र व सांयकाल दशधर्मों पर सरल शैली में प्रवचन हुये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अनन्त चतुर्दशी को भगवान वासुपूज्य का निर्वाणोत्सव हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रमों में श्री सुनीलजी पाण्ड्या का सक्रिय सहयोग रहा।

*** खड़ैरी (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर के प्रात: पूजन के पश्चात् बारह-भावनाओं पर सारगर्भित प्रवचन हुए, इसके अतिरिक्त दोपहर में चौबीस तीर्थंकर विधान के उपरान्त आपके द्वारा ही पंचपरावर्तन विषय पर कक्षा ली गई तथा रात्रि में गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई। प्रवचनोपरान्त स्थानीय विद्वान राजेन्द्रजी, भानुजी, मनोजजी एवं चैतन्यजी शास्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये।

*** सागर (म.प्र.) :** यहाँ महावीर जिनालय में पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन के प्रात: समयसार कलश तथा रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। आपके साथ ही आपकी धर्मपत्नी द्वारा भी बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

यहाँ पण्डित सुनीलजी 'धवल' द्वारा भक्ति-गीतों सहित पूजन-विधान के अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र की सारगर्भित कक्षा भी ली गई।

*** इन्दौर (म.प्र) :** यहाँ श्री पंच बालयति विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय साधना नगर में डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर के प्रात: पंचास्तिकाय ग्रंथ पर प्रवचन हुए साथ ही दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं नियमसार की कक्षा ली गई तथा रात्रि में भी उनके ही द्वारा दशधर्मों पर किये गये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

*** सेलू (महा.) :** यहाँ पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल के प्रात: पूजन के उपरान्त क्रमबद्धपर्याय विषय पर ओजस्वी प्रवचन हुये। दोपहर में समयसार के आधार से सैंतालीस शक्तियों की एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र-भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुए एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

*** छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं श्री पार्श्वनाथ

जिनालय में दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प्रात: पण्डित विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन के नियमसार ग्रंथ पर प्रवचन हुए, दोपहर में शंका-समाधान का आयोजन किया गया। रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुए।

इसी दौरान ब्र. समता बहन ने छहढाला एवं निमित्तोपादान पर कक्षा ली। अंतिम दिन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित विवेकजी जैन की उपस्थिति में क्षमावाणी पर्व मनाया गया।

*** नागपुर (महा.) :** यहाँ विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर के प्रात: संवर अधिकार, दोपहर में षट् लेश्या एवं रात्रि में जैसी गति वैसी मति विषय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन दोपहर में पण्डित कांतिजी इन्दौर एवं पण्डित मनीषजी सिद्धान्त के सान्निध्य में समयसार विधान का आयोजन हुआ। पर्व के उपरान्त दो दिन की मुक्तागिरि यात्रा के मध्य भातकुली में 'मेरे जीवन में धर्म की शुरुआत कैसे ?' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

*** घाटकोपर (मुम्बई) :** यहाँ पर्व के दौरान डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अध्याय पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए। इसी अवसर पर यहाँ दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन भी किया गया। पर्व के मध्य में तीन दिन पण्डित पंकजजी दहातोंडे द्वारा रत्नकरण्डश्रावकाचार पर कक्षा ली गई। एक दिन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के प्रवचन का लाभ मिला। इसी प्रसंग पर डॉ. बंसल को स्थानीय समाज द्वारा 'धर्मरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

*** अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय प्रांगण में दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर हुए आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया एवं मेघाजी लुहाड़िया के निर्देशन में पण्डित विजयजी शास्त्री मोड़ी द्वारा सम्पन्न कराये गये।

जयपुर के विविध उपनगरों में प्रभावना

मुलतान जैन मंदिर, आदर्शनगर में पण्डित रमेशचंदजी (लवाण वाले), **मालवीय नगर से. 10** में पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल, **हरिमार्ग-सिविल लाईन्स एवं जनता कॉलोनी** में पण्डित संजयजी सेठी, **मानसरोवर-वरुणपथ** में डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, **महात्मा गांधीनगर** में पण्डित दिनेशजी शास्त्री, **दीवानजी मंदिर (राजस्थान जैनसभा)** में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, **शक्तिनगर** में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री, **खजांची की नसियाँ** में पण्डित सुनीलजी शास्त्री शाहगढ़, **तेरापंथियान जैन मंदिर, जौहरी बाजार दड़ा** में पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, **महावीर स्कूल, नगर विभाग** में पण्डित अनुजकुमारजी शास्त्री, **महावीर पब्लिक स्कूल, सी-स्कीम** में पण्डित प्रशान्तजी उखलकर, **महावीर स्कूल, सी-स्कीम** में पण्डित अभिषेक जी शास्त्रीके प्रवचनों का लाभ मिला।

मुकुन्दभाई खारा का सम्मान

मुमुक्षु समाज के जाने-पहचाने आदरणीय **श्री मुकुन्दभाई खारा** पूज्य कहान गुरुदेव श्री के शासन प्रभावना, तत्त्वप्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान एवं आध्यात्मिक तथा सामाजिक जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के प्रति 50 वर्ष से भी अधिक समय से अनेक संस्थाओं में सेवारत हैं।

अत: दीपावली के अवसर पर दिनांक 7 नवम्बर, 07 को देवलाली में समस्त मुमुक्षु समाज की ओर से उनका सम्मान किया जायेगा। इस अवसर पर सभी को पधारने हेतु हमारा हार्दिक निवेदन है, इसी अवसर पर दिनांक 6 से 10 नवम्बर, 07 तक आयोजित दिपावली पूजन-विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का लाभ भी आपको प्राप्त होगा।

कृपया आपके आगमन की सूचना निम्नलिखित पते पर देने की कृपा करें ह्न

173/175, मुम्बादेवी रोड़, मुम्बई ह्न 400002. फोन नं. 23425241	पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक कहान नगर, लामरोड़, देवलाली ह्न 422401.

(इष्टोपदेश प्रवचन, पृष्ठ : 18 का शेष...)

कम है और निर्जरा भी कम होती है तथा जब सामान्यस्वभाव का आश्रय बढ़ जाता है, तब सातवें गुणस्थान में शुद्धि बढ़ जाने से कर्मों की निर्जरा भी विशेष होती है।

जीव को इस वीतरागी धर्म का अभ्यास नहीं है, महिमा नहीं है; अत: धर्म समझना कठिन लगता है। जिसने पर से और राग से लाभ की मिथ्या मान्यताएँ पकड़ रखी हैं, उसे सत्यधर्म कैसे पकड़ में आये? एक सामान्य द्रव्यस्वभाव के आश्रय से ही धर्म प्रकट होता है। विशेष अवस्था, शुभभाव या परपदार्थ का आश्रय करने से धर्म नहीं प्रकटता। सामान्य के आश्रय से विशेष में धर्म प्रकट होता है। परद्रव्य या परभाव के लक्ष्य से हित नहीं होता। स्वभाव के लक्ष्य से ही हित होता है। यहाँ थोड़े से में हित का मार्ग बताकर पूज्यपादस्वामी ने कमाल कर दिया है। दिगम्बर संतों की बलिहारी है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का लक्ष्य छोड़ स्वभाव का लक्ष्य करे तो तेरा कल्याण होगा। देव-शास्त्र-गुरु के लक्ष्य से भी आत्मा में धर्म प्रकट नहीं होता। **(क्रमश:)**

दिल्ली में अपूर्व धर्म प्रभावना

देश की राजधानी दिल्ली में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर 'अध्यात्म तीर्थ' आत्म साधना केन्द्र के तत्त्वावधान में लगभग 38 स्थानों पर 46 विद्वानों के द्वारा धर्म-प्रभावना हुई। दिल्ली के कोने-कोने में हुई अपूर्व धर्म प्रभावना को अतिसंक्षेप में यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

आत्म साधना केन्द्र : यहाँ पं. प्रयंकजी शास्त्री एवं पं. अमितजी शास्त्री के निर्देशन में दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पं. शांतिलालजी सोगानी महिदपुर एवं पं. जयकुमारजी बाँरा के तीनों समय हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। पं. स्वतंत्रजी शास्त्री फुटेरा एवं पं. सुरेन्द्रजी शास्त्री शाहगढ़ का समस्त कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग रहा।

शिवाजी पार्क में पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल, **मयूर विहार** में पं. राकेशजी शास्त्री, **बैंक एंक्लेव-लक्ष्मीनगर** में पं. अमितजी जैन शाहदरा, **पटपड़गंज** में पं. स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, **दिलशाद गार्डन** में पं. अंचलजी शास्त्री ललितपुर, **पार्श्वविहार** में पं. ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, **पाण्डव नगर** में पं. आशीषजी शास्त्री मौ, **न्यू उस्मानपुर** में पं. विकासजी शास्त्री बानपुर, **अशोक नगर** में पं. नीरजजी दिलशाद गार्डन एवं पं. जयप्रकाशजी शास्त्री साहिबाबाद, **बी-1, जनकपुरी** में पं. सचिनजी शास्त्री बरेली, **बी-2, जनकपुरी** में पं. मनीषजी शास्त्री बरेली, **सरस्वती विहार** में पं. संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **केशवपुरम्** में पं. निपुणजी शास्त्री टीकमगढ़, **दिल्ली केन्ट** में पं. चैतन्यजी शास्त्री खड़ैरी, **पालम गांव** में पं. राकेशजी शास्त्री लिधौरा, **पीरागढ़ी चौक** में पं. सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, **पुष्पांजली एंक्लेव** में पं. संदीपजी शास्त्री गोहद, **रोहिणी-15** में पं. श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, **राजा बाजार** में पं. मयंकजी शास्त्री ध्रुवधाम, **पहाड़गंज** में पं. नितिनजी शास्त्री विदिशा, **चांदनी चौक** में पं. सतेन्द्र मोहनजी जैन, **राजेन्द्र नगर** में पं. अश्विनजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **सीताराम बाजार** में पं. समकितजी शास्त्री ध्रुवधाम, **शक्ति नगर** में पं. संजीवजी जैन उस्मानपुर, **रोहतक रोड़** में डॉ. वीरसागरजी जैन, **आर्यपुरा** में पं. विकासजी जैन नवीन शाहदरा, **मॉडल बस्ती** में पं. जितेन्द्रजी शास्त्री दिल्ली, **गोविन्दपुरी** में पं. संजीवजी जैन उस्मानपुर, **सैनिक फॉर्म** में पं. अशोकजी शास्त्री राघोगढ़, **बदरपुर** में पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री बरां, **ग्रीनपार्क** में पं. अशोकजी शास्त्री, **विकासपुरी** में पं. अविरलजी शास्त्री, **वसंतकुन्ज** में डॉ. सुदीपजी जैन एवं पं. आदित्यजी शास्त्री खुरई, **तुगलकाबाद एक्स.** में पं. नीरजजी शास्त्री खड़ैरी, **द्वारका** में पं. पंकजजी शास्त्री बंडा, **बिनोली (उ.प्र.)** में पं. राजेन्द्रजी टीकमगढ़ एवं पं. नवीनजी शास्त्री, **फरीदाबाद (हरियाणा)** में पं. शौर्यजी शास्त्री ध्रुवधाम के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि सभी विद्वान पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से भेजे गये। दि.26 सित. को आत्मसाधना केन्द्र में उक्त विद्वानों के सान्निध्य में सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन हुआ। टोडरमल स्मारक के इस सहयोग हेतु आत्मार्थी ट्रस्ट ने अत्यन्त आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर 'आत्मार्थी जैन डायरेक्टरी' का विमोचन हुआ। संचालन पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा ने तथा आभार प्रदर्शन श्री पृथ्वीचन्दजी जैन ने किया। **- सुमति सेठिया**

वैराग्य समाचार

1.जबलपुर (रांझी) निवासी श्री प्रेमचन्दजी जैन का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 8 अक्टूबर, 07 को शान्त परिणामों सहित देहावसान हो गया। आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के ताऊजी थे।

आपने मोराजी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। आपमें बचपन से ही स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि थी। सोनगढ़ तथा जयपुर में आयोजित होने वाले शिविरों में आप नियमित रूप से उपस्थित रहते थे। आपके पूरे परिवार में धार्मिक रुचि आपकी ही प्रेरणा से है।आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 500/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

2. कानपुर निवासी श्री आलोक जैन, अनिल जैन एवं अतुल जैन की माताजी **श्रीमती सरलादेवी जैन** का 86 वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने से दिनांक 9 सितम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आप धार्मिक विचारधारा की स्वाध्यायप्रेमी महिला थीं, तथा कानपुर में प्रतिवर्ष लगनेवाले बाल-युवा संस्कार शिविर की प्रेरणा स्रोत थीं।

3. छिन्दवाड़ा निवासी श्री तरुणजी पाटनी का दिनांक 24 अगस्त, 07 को निधन हो गया। ज्ञातव्य है कि आप छिन्दवाड़ा युवा फैडरेशन के अध्यक्ष होने के साथ ही सक्रिय समाजसेवी थे तथा कुछ समय से कैंसर से पीड़ित थे।

4. छिन्दवाड़ा निवासी श्री प्रबोधचंदजी जैन का देहविलय हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। आपके द्वारा गुरुदेव श्री के प्रवचनसार पर हुए प्रवचन दिव्यध्वनिसार के 2 भागों के अनुवाद का कार्य किया गया है।

5. इन्दौर निवासी पण्डित श्री नाथूलालजी शास्त्री का दिनांक 9 सितम्बर, 07 को 97 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप राष्ट्रीय संस्था दिगम्बर जैन महासमिति के संस्थापक रहे हैं तथा 30 वर्षों तक आपने महासभा परीक्षा बोर्ड का संचालन भी किया है।आप देश के विश्रुत प्रतिष्ठाचार्य होने के साथ ही दिगम्बर जैन महाविद्यालय, इन्दौर के प्राचार्य तथा अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष भी थे।

6. नोएडा निवासी डॉ.धन्यकुमार जैन का दिनांक 9 सितम्बर, 07 को निधन हो गया। आप कुछ समय से बीमार चल रहे थे। ज्ञातव्य है कि आप अखिलभारतवर्षीय जैसवाल जैन महासभा के अध्यक्ष पद पर रहते हुए अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे साथ ही तीर्थक्षेत्रों की रक्षा एवं समाज एकता व उत्थान में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों, यही मंगलकामना है।

साहित्य नि:शुल्क मंगायें

सभी ब्रह्मचारी/त्यागी-व्रतियों को उनके निजी स्वाध्याय के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं उनकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा हमारे यहाँ से प्रकाशित साहित्य एक साधर्मी भाई की ओर से भेंट स्वरूप दिया जा रहा है। एतदर्थ जो भी भाई साहित्य मंगाना चाहते हैं; वे निम्न पते पर स्वयं का पता लिखा 5 रुपये की टिकिट लगा लिफाफा भेजें, उन्हें इस योजना के अन्तर्गत उपलब्ध साहित्य की सूची भेजेंगे। वे उस सूची में जिस-जिस ग्रन्थ पर निशान लगाकर भेजेंगे। वह उन्हें नि:शुल्क भेजा जायेगा। ध्यान रहे ! साहित्य सूची मंगाने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2007 है। **ह्न डॉ. दीपक जैन**

सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर - 302015

व्याख्यानमाला सम्पन्न

मुम्बई (महा.) : यहाँ दिनांक 8 सितम्बर से 15 सितम्बर 2007 तक जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित आठ दिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई।

व्याख्यानमाला का आयोजन मुम्बई शहर के भारतीय विद्या भवन चौपाटी, वालकेश्वर, सी. पी. टैंक, दादर, चिंचबंदर, चिंचपोकली, घाटकोपर, ताड़देव इत्यादि स्थानों पर हुआ।

इसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट इत्यादि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पटाखा विरोधी पोस्टर मंगायें

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन और अ. भा. जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर द्वारा दीपावली पर पटाखों से होने वाली हिंसा और अन्य हानियों से अवगत कराने हेतु एक रंगीन पोस्टर एवं फ्लैक्स भी प्रकाशित किये हैं। आपसे निवेदन है कि अपनी आवश्यकतानुसार पोस्टर और फ्लेक्स मंगाकर दुकानों, सार्वजनिक स्थानों, विद्यालयों आदि स्थानों पर लगाकर जीवों की रक्षा में निमित्त बनें। 100 या इससे अधिक पोस्टर के आर्डर पर आपकी भावनानुसार नीचे नाम प्रकाशित किया जायेगा। प्रति पोस्टर 4/-रू. एवं प्रति फ्लैक्स 100/-रू. (3 x 2 फुट) मूल्य निर्धारित किया गया है। **ह्न विराग शास्त्री,** 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर

तत्त्वप्रचार की नई कड़ी : पत्राचार पाठ्यक्रम

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड का पंचवर्षीय पाठ्यक्रम जो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में प्रवेश प्राप्त छात्र नियमित पढ़ते हैं ह्न उसी पाठ्यक्रम का घर बैठे अध्ययन कर जो परीक्षा देना चाहते हैं अथवा अन्य विषयों की भी जो परीक्षा देना चाहते हैं, उनके लिए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट **पत्राचार-पाठ्यक्रम** प्रारंभ करने जा रहा है। इनमें (1) द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (2) त्रिवर्षीय सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा एवं (3) एक वर्षीय विषय विशारद परीक्षा प्रमुख हैं।

इसकी विस्तृत नियमावली एवं सत्र 2007-08 के लिए प्रवेश फॉर्म प्राप्त करने हेतु स्वयं का पूरा पता लिखा एवं 5/- का डाक-टिकट लगा लिफाफा निम्नलिखित पते पर भेजें।

-पीयूष जैन/धर्मेन्द्र शास्त्री

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

सम्पादक सम्मेलन अब 13 नवम्बर को...

अ. भा. जैन पत्र संपादक संघ के तत्त्वावधान में आयोजित द्वितीय जैन पत्र सम्पादक सम्मेलन अब 13 नवम्बर,07 को चौरासी मथुरा में होगा। पहले इस आयोजन की तिथि 11 नवम्बर घोषित की गई थी; परन्तु भाई दोज की तिथि होने से यह परिवर्तन किया गया है। **ह्न अखिल बंसल**

आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री के उद्‌गार ...

एक रूपये की पुस्तक चार पैसे में..

''हमने तो किसी से नहीं कहा कि कमेटी का कुछ करो, तीर्थक्षेत्र का कुछ करो; हमने तो यह भी नहीं कहा कि मन्दिर बनवाओ। बहुतों ने हमसे कहा, फिर भी हमने तो यही कहा कि शास्त्रों की कीमत कम से कम रखो कि जिससे शास्त्र लोगों के पास पहुँच सकें।

क्रिश्चियन लोग तो एक रुपये की पुस्तक चार पैसे में देते हैं। अरे भाई ! अभी तो सत्शास्त्र के प्रचार करने का समय है; अत: जितना हो सके सत्शास्त्रों का प्रचार-प्रसार करो।''

ह्न समयसार शक्ति अधिकार पर हुये प्रवचन से साभार,
सी.डी.नं. SS 23, प्रवचन क्रमांक 565, शक्ति नं. 10 से 41